ऊंचे तार पर मिरिट

एमिली अर्नाल्ड मिकुल्ली

हिंदी अनुवाद: अरविन्द गुप्ता

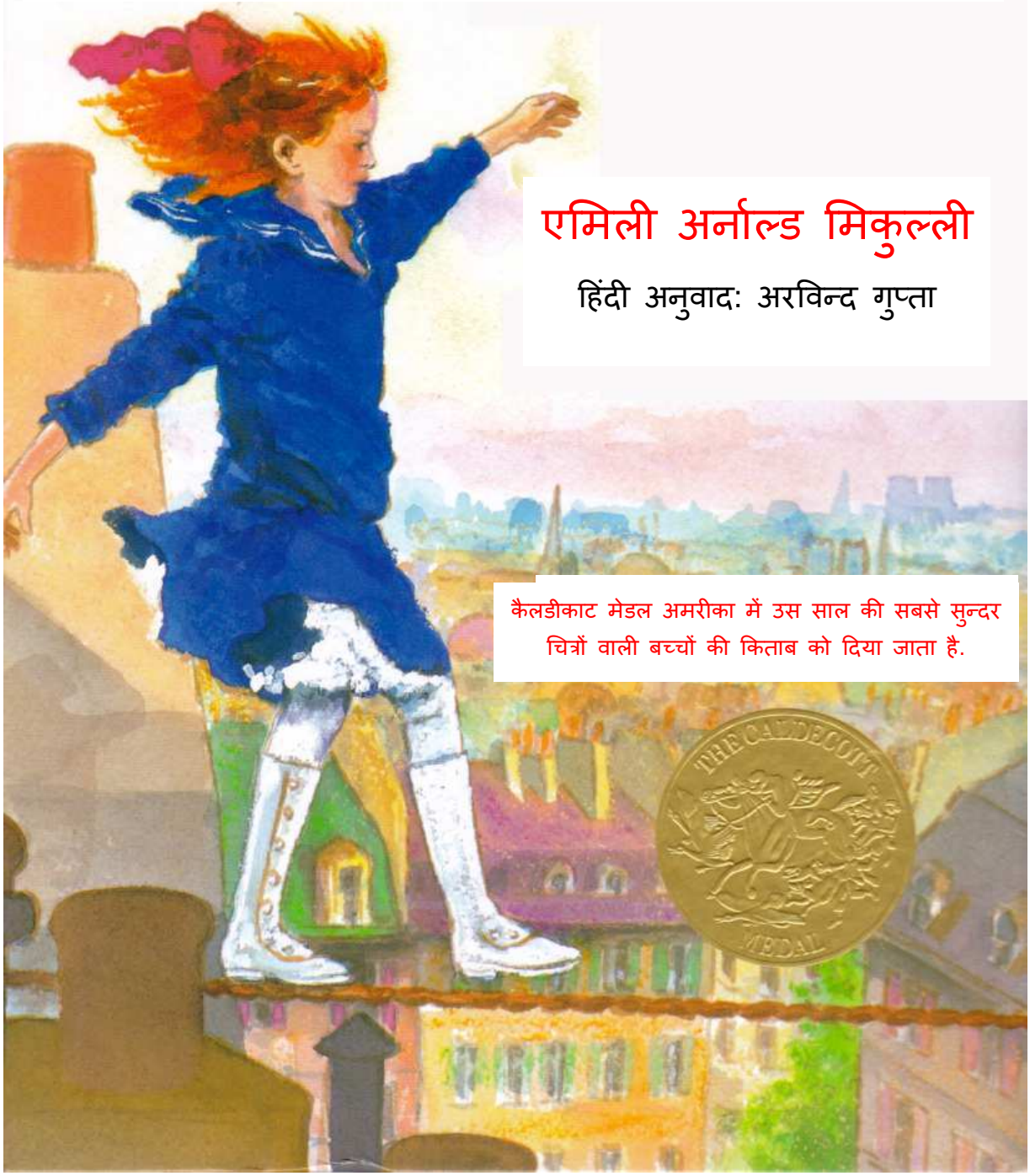

कैलडीकाट मेडल अमरीका में उस साल की सबसे सुन्दर चित्रों वाली बच्चों की किताब को दिया जाता है.

RIS

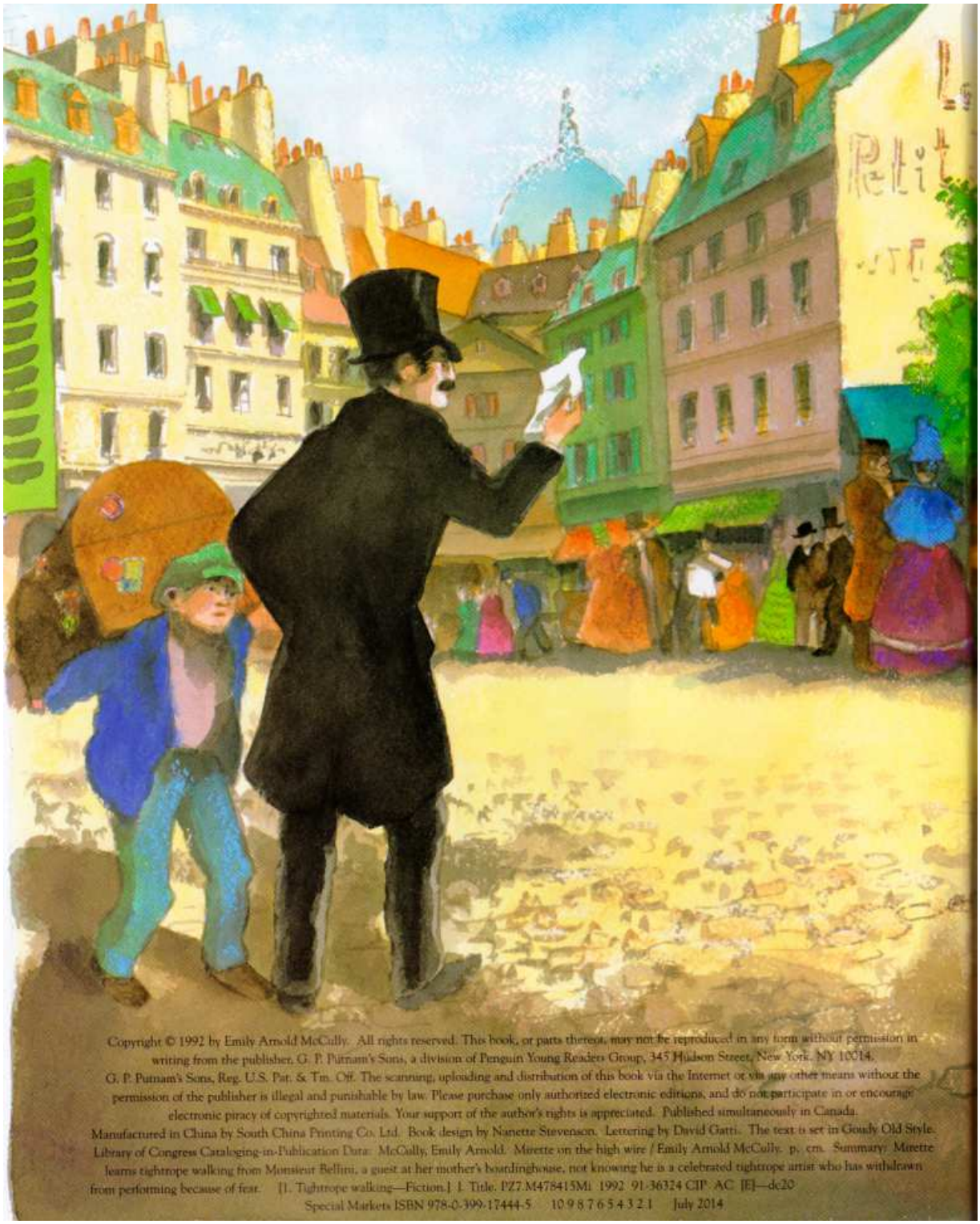

Copyright © 1992 by Emily Arnold McCully. All rights reserved. This book, or parts thereof, may not be reproduced in any form without permission in writing from the publisher, G. P. Putnam's Sons, a division of Penguin Young Readers Group, 345 Hudson Street, New York, NY 10014.
G. P. Putnam's Sons, Reg. U.S. Pat. & Tm. Off. The scanning, uploading and distribution of this book via the Internet or via any other means without the permission of the publisher is illegal and punishable by law. Please purchase only authorized electronic editions, and do not participate in or encourage electronic piracy of copyrighted materials. Your support of the author's rights is appreciated. Published simultaneously in Canada.
Manufactured in China by South China Printing Co. Ltd. Book design by Nanette Stevenson. Lettering by David Gatti. The text is set in Goudy Old Style.
Library of Congress Cataloging-in-Publication Data: McCully, Emily Arnold. Mirette on the high wire / Emily Arnold McCully. p. cm. Summary: Mirette learns tightrope walking from Monsieur Bellini, a guest at her mother's boardinghouse, not knowing he is a celebrated tightrope artist who has withdrawn from performing because of fear. [1. Tightrope walking—Fiction.] I. Title. PZ7.M478415Mi 1992 91-36324 CIP AC [E]—dc20
Special Markets ISBN 978-0-399-17444-5 10 9 8 7 6 5 4 3 2 1 July 2014

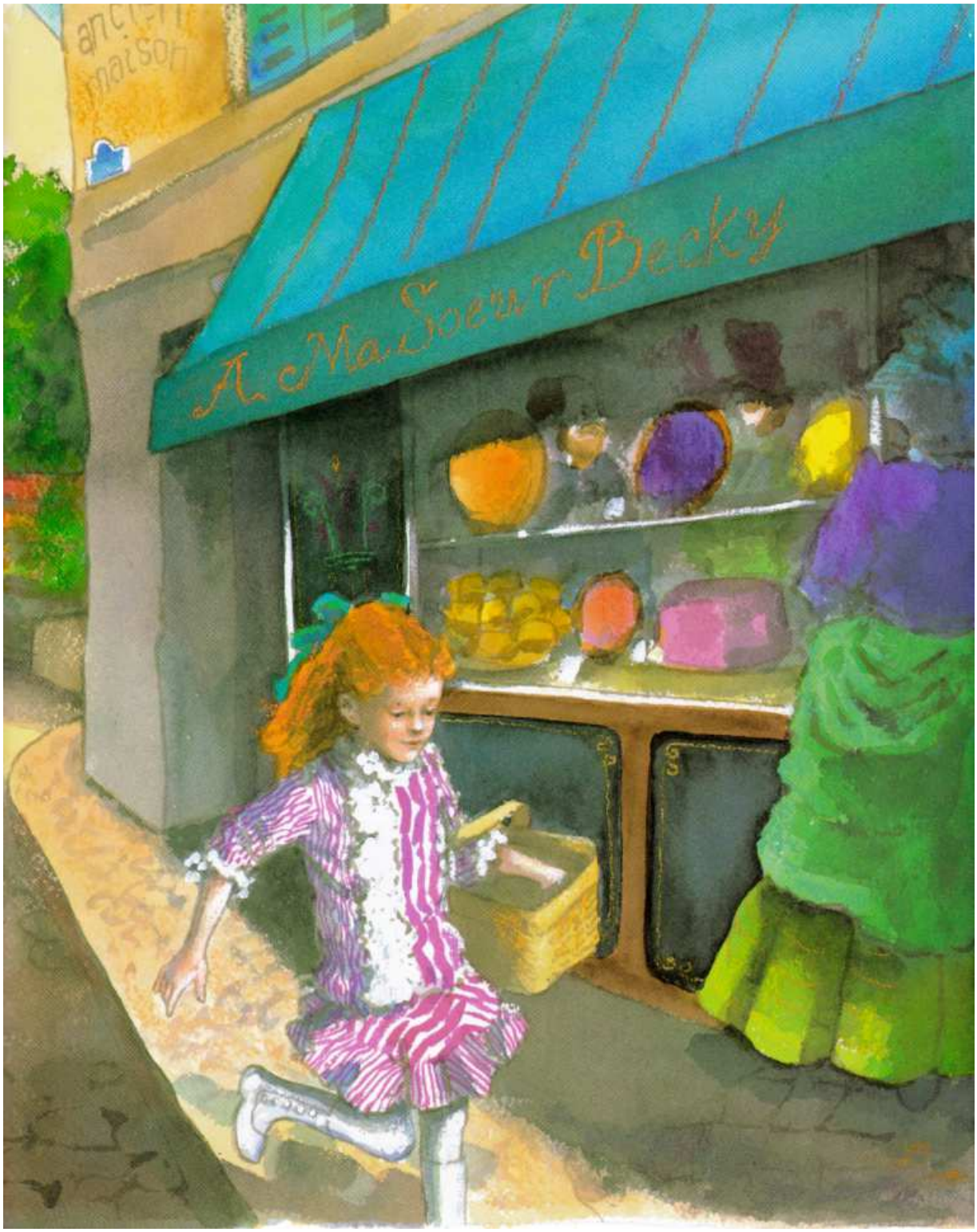

A Ma Soeur Becky

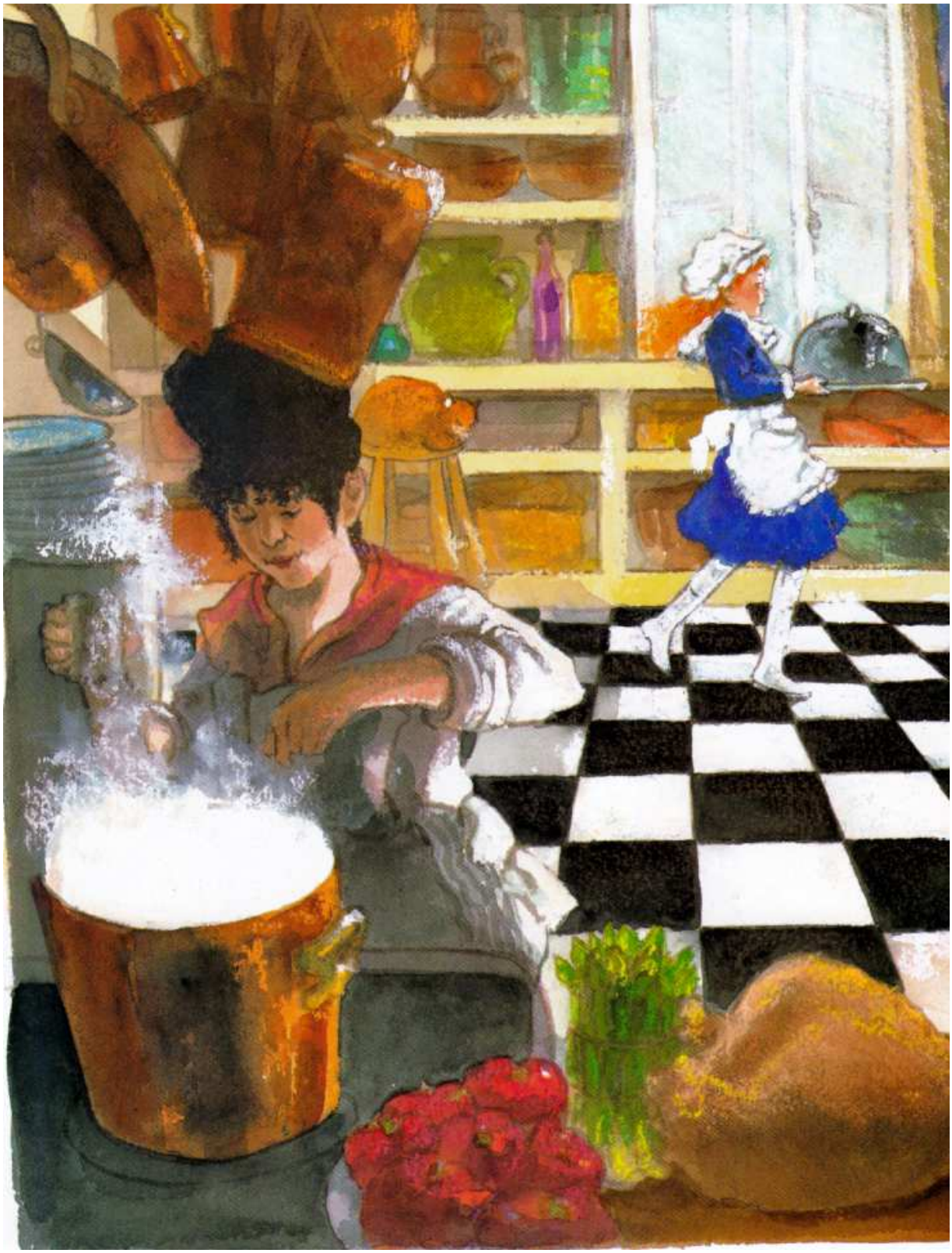

सौ बरस पहले पेरिस के थियेटर और संगीत की महफिलें दुनिया भर के घुमक्कड़ कलाकारों को आकर्षित करती थीं. और उनके रहने का सबसे मनपसंद अड्डा था - गैतू बोर्डिंग हाउस, जो इंग्लिश स्ट्रीट पर स्थित था.

नट, बाजीगर, अभिनेता, जादूगर और करतब दिखाने वाले तमाम तमाशबीन - मास्को से न्यूयॉर्क तक के कलाकार, विधवा गैतू के पंखों से भरे मुलायम गद्दों पर सोते, और वहां के लज़ीज़ खाने का लुत्फ़ लेते.

मैडम गैतू अपने मेहमानों की खिदमत का भरपूर ख्याल रखतीं. इसमें उनकी बेटी मिरिट भी उनकी भरपूर मदद करती. मिरिट कपड़े धोने, आलू छीलने, सब्जी काटने और फर्श पोछने में उस्ताद थी. वो हरेक की बात बड़े ध्यान से सुनती. उसे सबसे ज्यादा मज़ा आवारा खानाबदोश लोगों के रोमांचक किस्से सुनने में आता. वे उसे पेरिस और दूर-दराज़ के मुल्कों के किस्से-कहानी सुनाते.

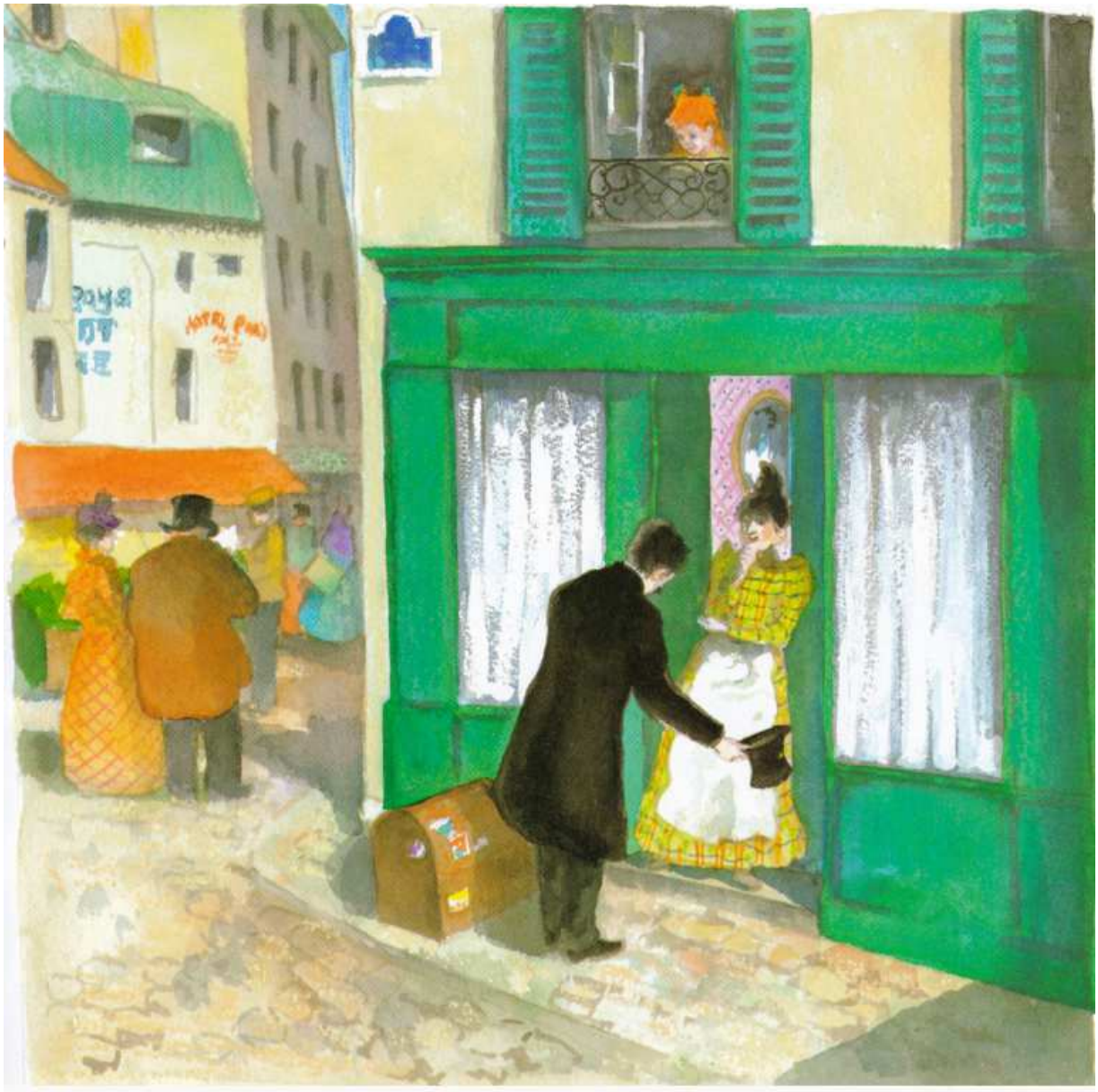

एक दिन वहां एक उदास चेहरे वाला अजनबी आया. उसका नाम बेलिनी था. उसने मैडम गैतू को बताया कि वो कभी ऊंचे तारों पर चलता था, पर अब वो उस धंधे से रिटायर हो चला था.

“मैं यहाँ सिर्फ आराम करने के लिए आया हूँ,” उसने कहा.

“मेरे पास आपके लायक एक बढ़िया कमरा है. कमरा पीछे की तरफ है और एकदम शांत है,” मैडम गैतू ने कहा. “ क्यूंकि कमरा पहली मंजिल पर है इसलिए वहां से आपको बाहर का कोई अच्छा नज़ारा नहीं दिखाई देगा.”

“मेरे लिए वो ठीक रहेगा,” अजनबी ने कहा. “मैं खाना भी अकेले ही खाऊंगा.”

उस दोपहर जब मिरिट उसके कमरे की मैली चादर लेने आई तो उसने एक अजनबी को आँगन में हवा में तने तार पर चलते हुए देखा! मिरिट उसे देखकर मंत्रमुग्ध रह गयी. मिरिट ने तमाम करतब देखे थे पर उनमें से यह वाकई में जादुई था! मिरिट के तलुए खुजलाने लगे! वो भी बेलिनी के पीछे-पीछे तने तार पर चलना चाहती थी.

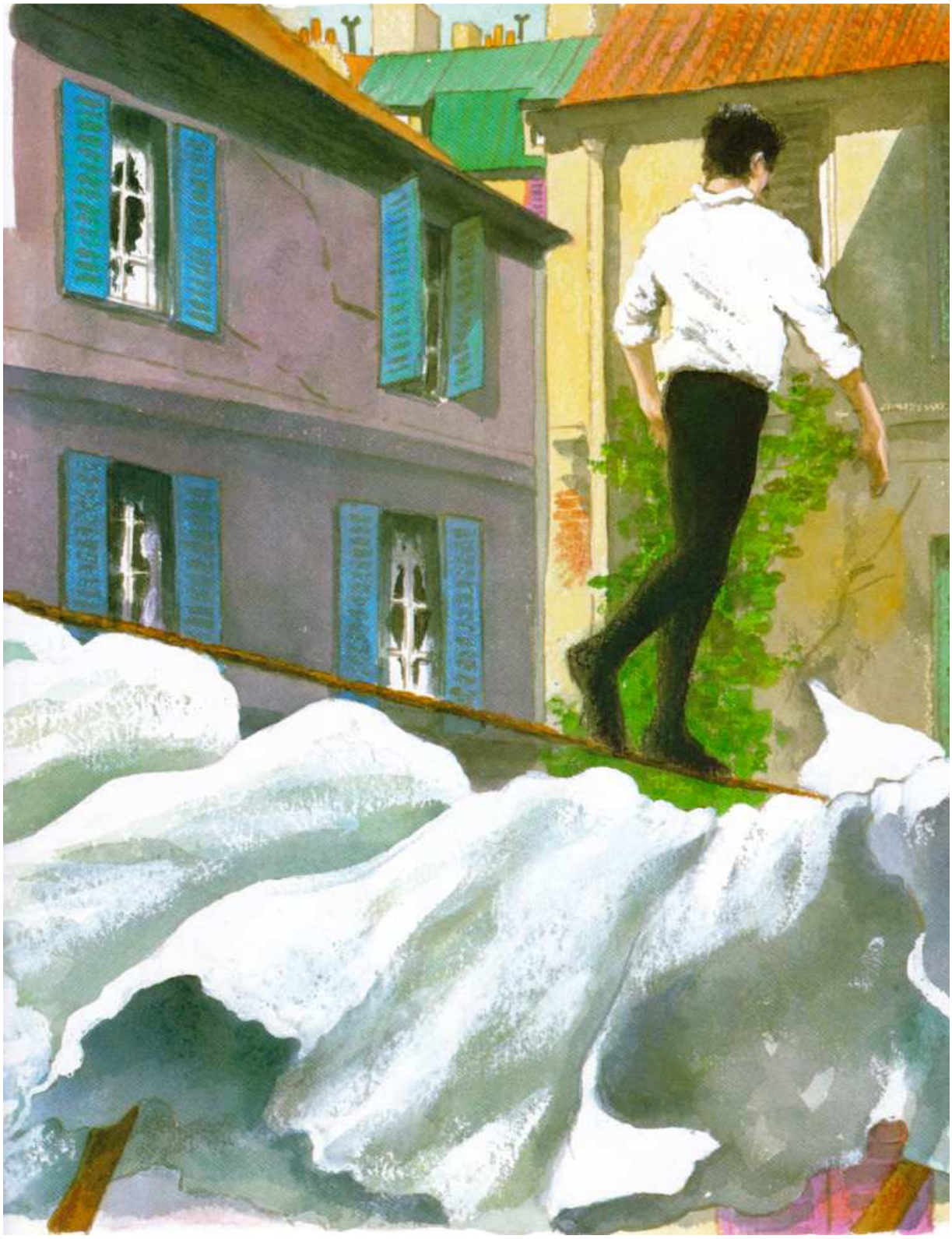

मिरिट ने कैसे करके अजनबी से बात करने की हिम्मत जुटाई. “मुझे माफ़ करें मिस्टर बेलिनी, पर मैं भी आपके जैसे तार पर चलना सीखना चाहती हूँ!” उसने नम्रता से कहा.

बेलिनी ने एक गहरी सांस ली. “ऊंचे तार पर चलना कोई अच्छी बात नहीं है,” उसने कहा, “अगर इसकी एक बार लत लग जाए तो फिर पांव को ज़मीन अच्छी नहीं लगती है.”

"कृपा मुझे सिखाएं!” मिरिट ने बेलिनी से भीख मांगते हुए कहा. “मेरे पांव ज़मीन से काफी नाखुश हैं.” पर बेलिनी ने “न” में अपना सर हिलाया.

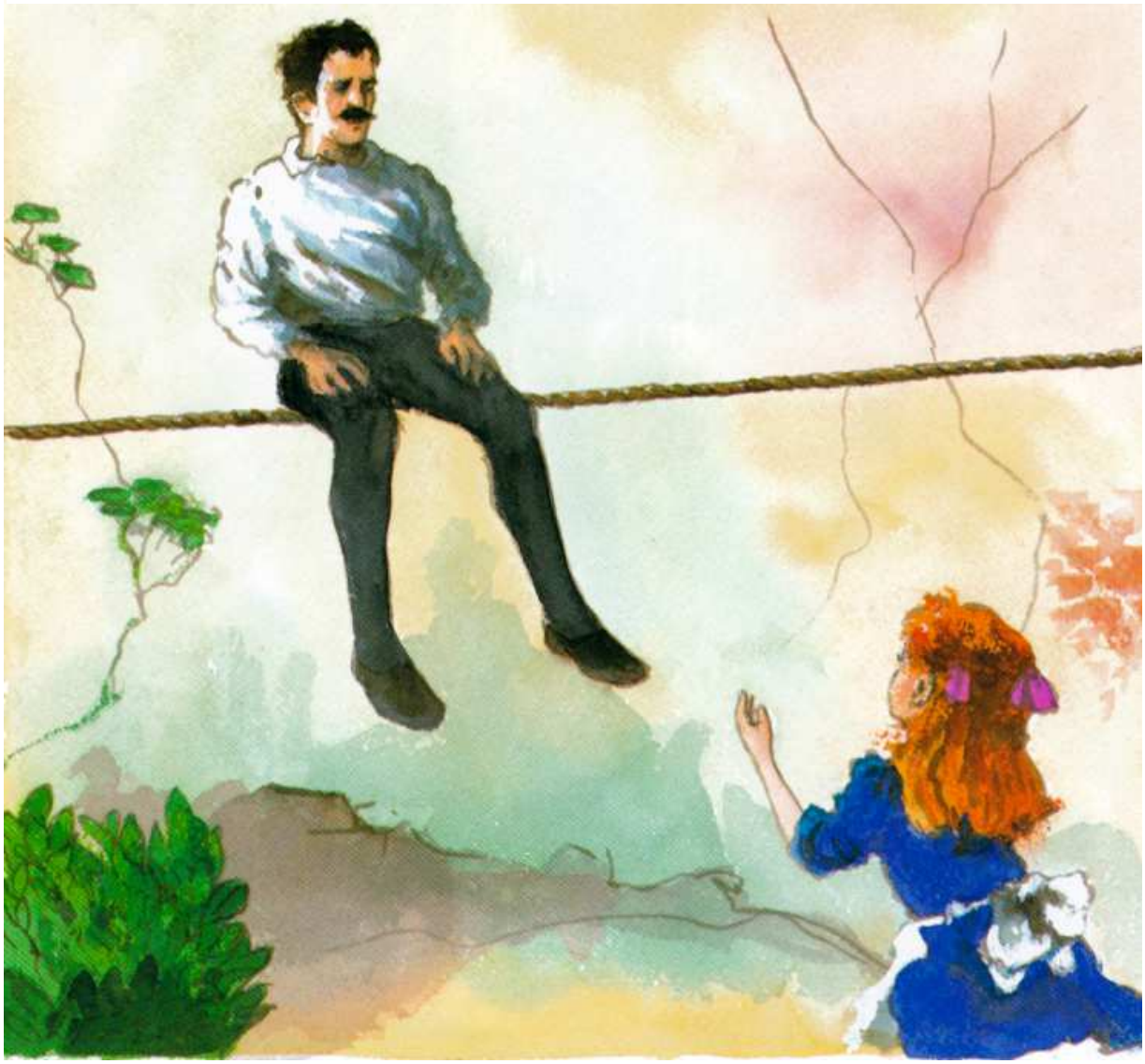

मिरिट रोजाना बेलिनी को देखती. वो अपने पैर तार पर रखता, उसकी आँखें सामने देख रही होतीं. फिर वो बिना नीचे देखे, तार की लम्बाई को पार कर जाता. ऐसा लगता जैसे वो किसी बेहोशी की हालत में चल रहा हो.

अंत में मिरिट खुद को रोक नहीं पायी. बेलिनी के जाने के बाद उसने खुद तार पर चलने की कोशिश की. उसके दोनों हाथ पवनचक्की जैसे हिलने लगे. कुछ ही देर में वो ज़मीन पर “धम्म” से गिर पड़ी. पर बेलिनी तो तार पर बड़ी आसानी से चल रहा था? बार-बार कोशिश करने के बाद शायद मिरिट भी तार पर चलना सीख पाए.

दस बार कोशिश के बाद वो चंद लम्हों के लिए एक-पैर पर खुद को संतुलित कर पाई. एक दिन के अभ्यास के बाद वो बिना हिले-डुले गिनती के तीन कदम चल पाई. फिर हफ्ते भर के लगातार प्रयास के बाद वो बिना गिरे तार की पूरी लम्बाई पार कर पायी. वो अपनी सफलता बेलिनी को दिखाने के लिए बेहद उत्सुक थी.

बेलिनी बहुत देर तक एकदम चुप रहा. फिर उसने कहा, “शुरू-शुरू में तो सभी गिरते हैं. और फिर बहुत से लोग अभ्यास करना छोड़ देते हैं. पर तुमने प्रैक्टिस नहीं छोड़ी. शायद तुममें इसके लिए प्रतिभा भी है.”

“आपका बहुत शुक्रिया,” मिरिट ने कहा.

अब मिरिट सुबह दो घंटे पहले उठती और सूरज निकलने से पहले ही दिन का सारा कामकाज पूरा कर देती. फिर वो पूरे दिन सीखती और तार पर चलने का अभ्यास करती.

बेलिनी एक कठिन बॉस था. “अपनी आँखों को कभी भटकने मत दो,” वो बार-बार मिरिट को एक ही नसीहत देता. “सिर्फ तार के बारे में और अंत तक पहुँचने के बारे में सोचो.”

जब मिरिट ने बिना गिरे एक दर्जन बार तार को पार किया, तब बेलिनी ने उसे तार पर चलते हुए सलूट करना सिखाया. फिर मिरिट ने तार पर दौड़ना, लेटना और कलाबाजी लगाना भी सीखा.

“अब मैं तार से कभी नीचे नहीं गिरूंगी,” मिरिट चिल्लाई.

“शेखी मत मारो,” बेलिनी ने उसे फटकारते हुए कहा. डांट सुनकर मिरिट का संतुलन बिगड़ गया और उसे तुरंत तार से नीचे कूदना पड़ा.

एक दिन लन्दन से एक एजेंट आया. उसने एक कमरा किराये पर लिया. उसने खाने के समय बेलिनी को देखा.

“बेलिनी को यहाँ देखकर मुझे बहुत धक्का लगा, और ताज्जुब भी हुआ!” वो चिल्लाया.

“तुम किसकी बात कर रहे हो?” एक कलाकार ने पूछा.

“मैं मशहूर बेलिनी की बात कर रहा हूँ! क्या तुम्हें पता नहीं कि वो पीछे के कमरे में रह रहा है?”

“वही बेलिनी जिसने दस मिनट में नियाग्रा-फाल्स को 1000-फीट ऊंचे तार पर पार किया था?” कलाकार ने पूछा.

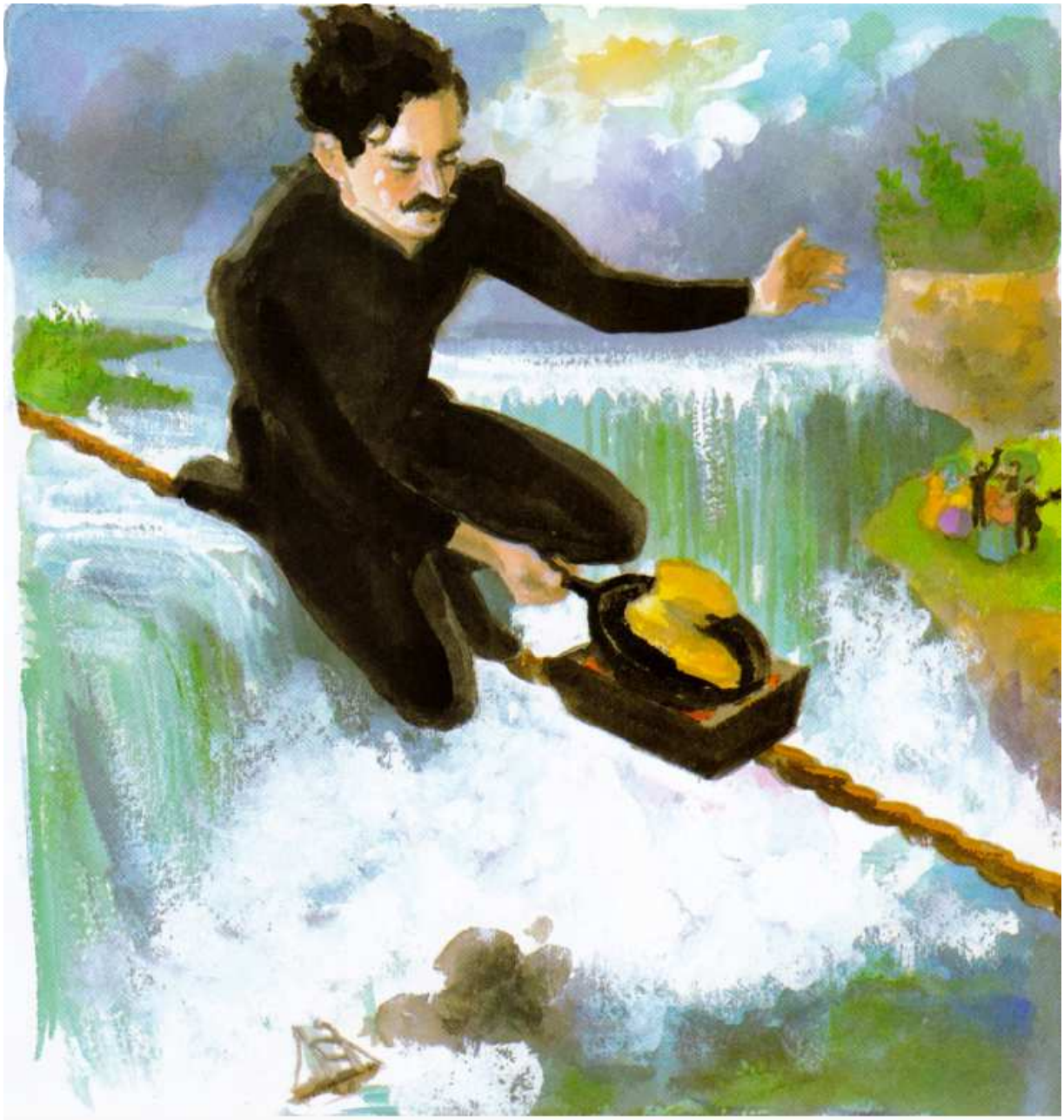

“फिर लौटते वक़्त उसने नियाग्रा-फाल्स के बीचोंबीच तार पर कोयले की अंगीठी जलाकर एक आमलेट बनाया था. बाद में उसने शेम्पेन की बोतल खोलकर नीचे खड़ी भीड़ का स्वागत किया था,” एजेंट ने अपनी याद ताज़ा करते हुए कहा.

“मेरे चाचा अक्सर यह कहानी मुझे सुनाते थे,” एक बाज़ीगर ने कहा.

“बेलिनी ने ऐल्प्स पहाड़ी को अपने पैरों में टोकरियाँ बाँध कर पार किया था.
उसने बार्सिलोना ने बैलों की लड़ाई वाले मैदान के ऊपर एक तोप दागी थी.
वो नेपल्स में आँखों पर पट्टी बाँध कर जलते हुए तार पर चला था.
उस इंसान में वाकई में गज़ब का जज़्बा है!” एजेंट ने कहा.

यह सुनकर मिरिट दौड़ी-दौड़ी बेलिनी के कमरे में गयी.

“क्या, यह सबकुछ सच है?” उसने रोते हुए पूछा. “क्या तुमने यह सब चीज़ें करीं थीं? तुमने मुझे उनके बारे में कभी क्यूं नहीं बताया? मैं भी वो सब चीज़ें करना चाहती हूँ! मैं तुम्हारे साथ जाना चाहती हूँ!”

“मैं तुम्हे अपने साथ नहीं ले जा सकता हूँ,” बेलिनी ने कहा.

“पर क्यूं?” मिरिट ने उससे पूछा.

बेलिनी बहुत देर संकोच में कुछ नहीं बोला. “क्यूंकि, मैं डरता हूँ,” उसने आखिर में कहा.

मिरिट को बहुत आश्चर्य हुआ. “डर!? उसने पूछा, “पर क्यूं?”

“एक बार अगर तुम्हें तार पर डर लग जाये, तो फिर वो ज़िन्दगी भर तुम्हारा पीछा नहीं छोड़ता है,” बेलिनी ने कहा.

“फिर तुम्हे डर छुड़ाने की कोशिश करनी चाहिए!” मिरिट ने जोर देकर कहा.

“मैं वो नहीं कर सकता,” बेलिनी ने कहा.

मिरिट दौड़ती हुई किचन में गयी. उसकी आँखों में आंसू छलक रहे थे. उसे तार पर चलने में कितना मज़ा आया था. और अब बेलिनी का डर उसकी सारी सीख और मज़े पर पानी फेर रहा था.

बेलिनी भी अपने कमरे में घंटों ऊपर-नीचे चहलकदमी करता रहा. मिरिट को निराश करने का उसे बेहद दुःख था! शाम तक वो इस निर्णय पर पहुंचा कि अगर उसने अपने डर का सामना नहीं किया तो फिर वो कभी मिरिट का सामना नहीं कर पायेगा. अब उसे अपने डर का सामना करना ही था. सवाल इतना था - क्या वो उसमें सफल होगा, या नहीं?

उस रात जब एजेंट वापस लौटा तो बेलिनी उसका इंतज़ार कर रहा था. एजेंट ने काफी उत्तेजित होकर बेलिनी की योजना को समझा. “मैं सब बंदोबस्त कर दूंगा,” उसने बेलिनी से वादा किया. “क्यूंकि बेहद भीड़ इकट्ठी होगी, तो मेरी कमाई भी अच्छी होगी. कितना खुशनसीब हूँ मैं, कि इस समय मैं पेरिस में हूँ.”

बेलिनी एक रस्सी खोजने गया जिसमें बीच में स्टील का तार हो. उसने फिर एक विन्च की सहायता से सुबह तक तार को ताना.

अगली शाम मिरिट को सड़क पर काफी भीड़ और खलबली दिखाई दी.

“ज़रा जाकर देखो कि बाहर क्या हो रहा है,” उसकी माँ ने कहा. “शायद उससे तुम्हारी उदासी कुछ कम हो.”

बाहर काफी शोरशराबा था. इतनी ज्यादा भीड़ थी कि पहले तो मिरिट को कुछ समझ में ही नहीं आया. फिर उसने देखा कि एजेंट आसमान में किसी चमकीली चीज़ कि ओर इशारा कर रहा था.

“देखो, महान बेलिनी आज वापस आया है!” एजेंट चिल्ला रहा था. क्या यह सच हो सकता था? यह सोच कर मिरिट का दिल ज़ोरों से धड़कने लगा.

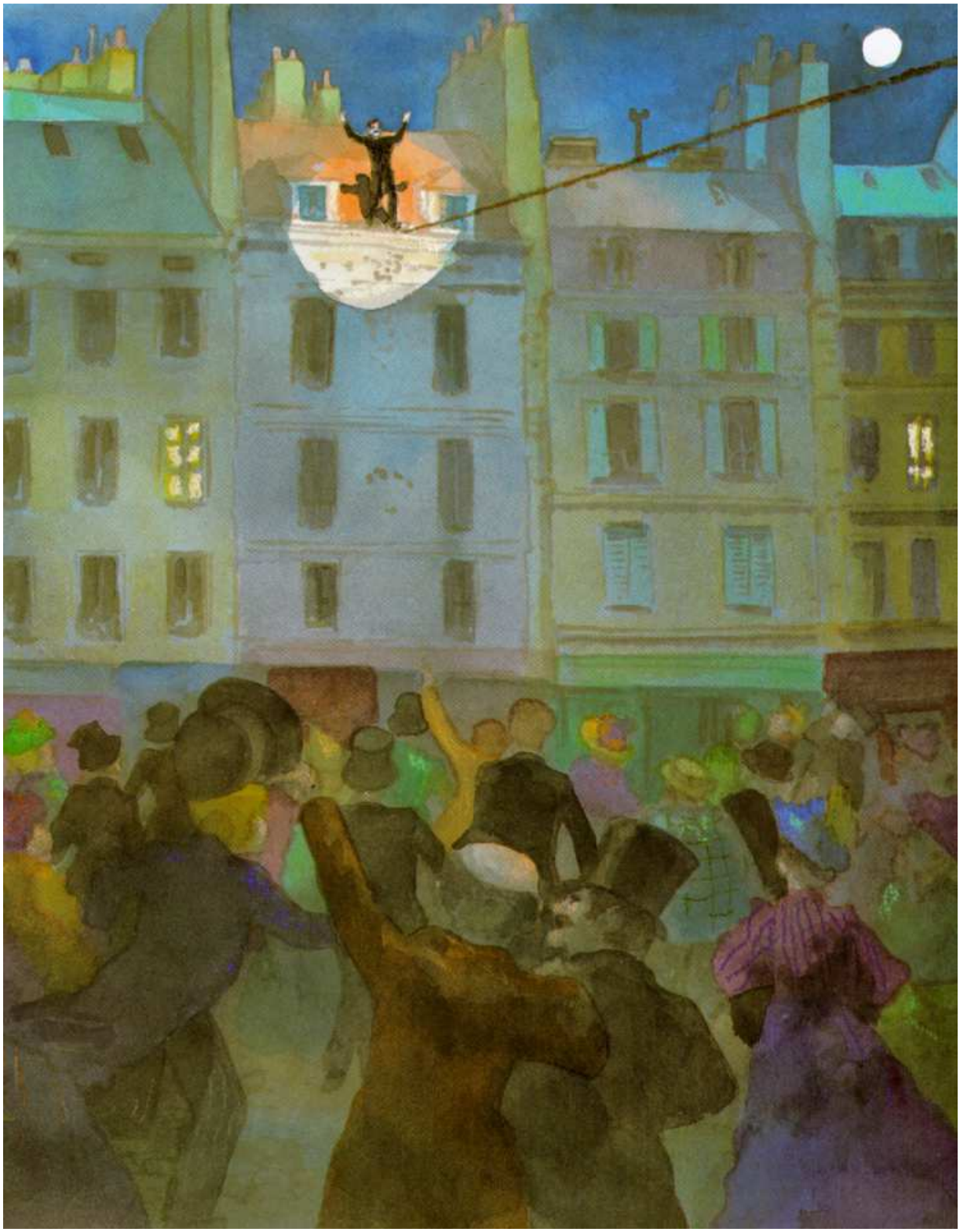

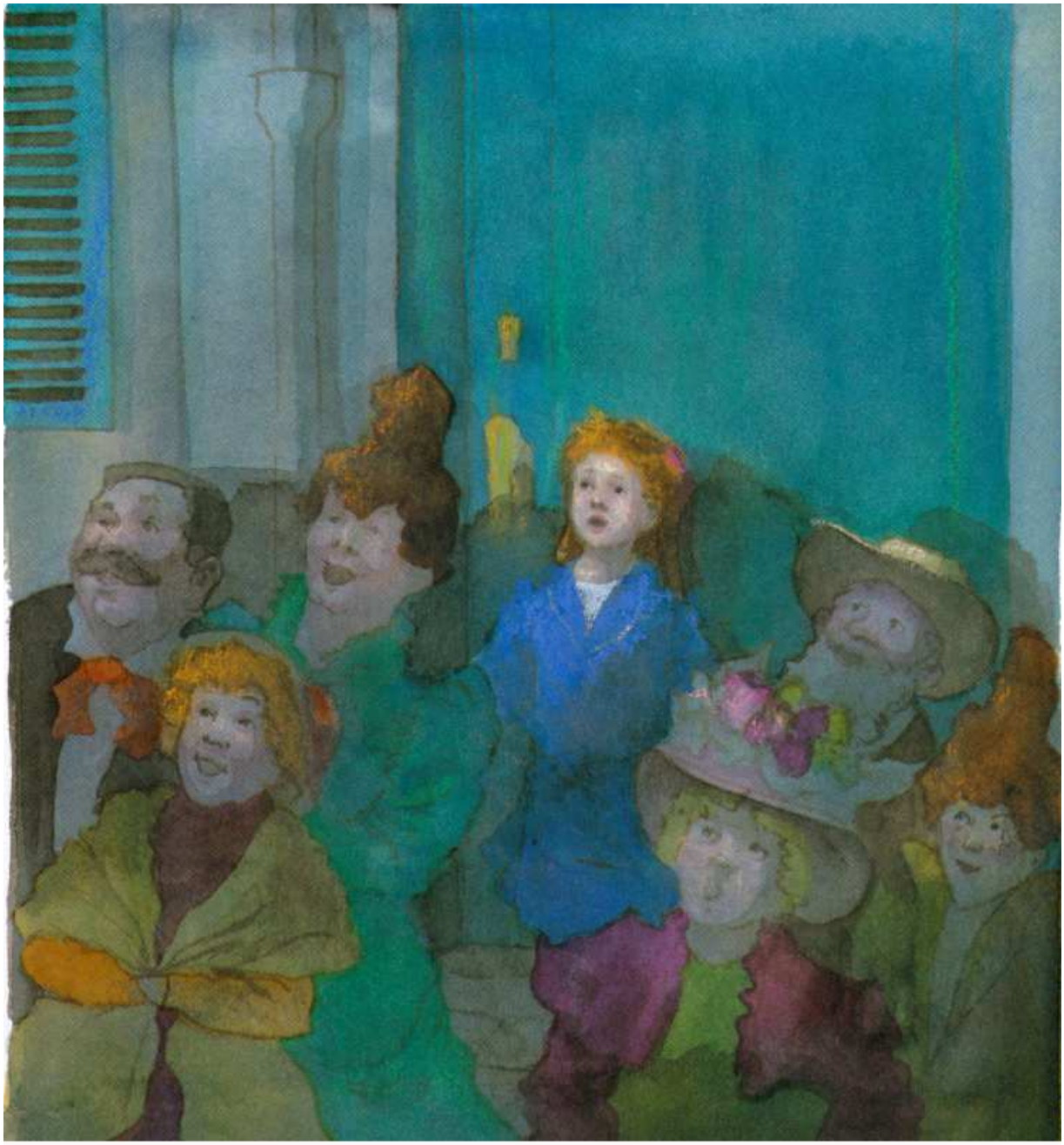

बेलिनी ने तार पर पैर रखा और फिर उसने भीड़ को सलाम किया. पर एक कदम रखते ही वो डर से सहम कर रुक गया. भीड़ ने उसकी बहुत हौसला अफजाई की. पर ज़रूर कुछ तो गड़बड़ था. मिरिट तुरंत गड़बड़ी की वज़ह समझ गयी. पल भर के लिए वो भी बेलिनी जैसे ही सहमी और डरी.

फिर वो तुरंत पीछे वाले दरवाज़े की ओर दौड़ी. वो तेज़ी से सीढ़ियों पर चढ़ी. तमाम मंजिलें चढ़ने के बाद ही वो इमारत की छत पर पहुंची.

उसने बेलिनी की ओर अपना हाथ बढ़ाया. बेलिनी मुस्कुराया और उसने मिरिट की ओर बढ़ना शुरू किया. मिरिट ने भी तार पर पैर रखा और वो भी असीम ख़ुशी संजोए धीरे-धीरे आसमान में तने तार पर चलती गयी. आज उसका सपना पूरा हुआ था.

“वाह! वाह!” नीचे से भीड़ चिल्लाई.

“महान बेलिनी की शागिर्द!” एजेंट ज़ोरों से चिल्लाया. एजेंट अपने मन में बेलिनी और मिरिट दोनों का, वर्ल्ड-टूर आयोजित करने का सपने संजो रहा था.

पर उस्ताद और उसकी शागिर्द सिर्फ तार के बारे में और अंत तक पहुँचने के बारे में सोच रहे थे.

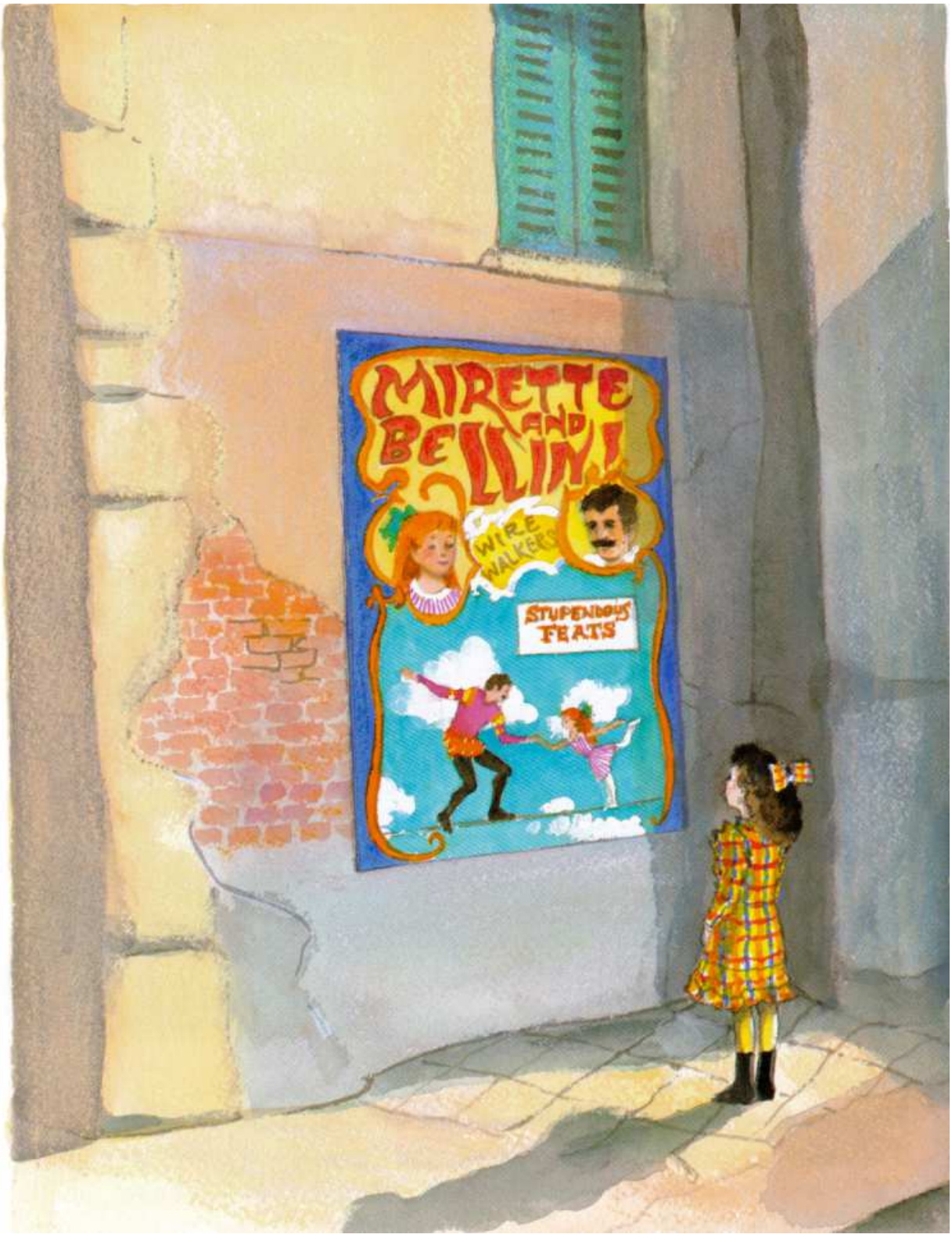
MIRETTE AND BELLINI
WIRE WALKERS
STUPENDOUS FEATS